डी० बी० कॉलेज जयनगर, मधुबनी
एल० एन० एम० यु० दरभंगा
नाम - मो० मुन्ना, सहायक प्राचार्य (अतिथि शिक्षक)
मैथिली - विभाग, BA-PART-I (Honours) paper-I
दिनांक - 19.05.2020

सप्रसंग व्याख्या

"ए धन जौवन पुत्र परिजन एत कि आछि परतीति।
कमल दल जल जिवनं टलमल भजहु हरिपद नीति॥"

प्रस्तुत पद्यांश गोविन्ददास द्वारा रचित गोविन्ददास भजनावली संग्रह मे संकलित वन्दना शीर्षकसँ लेल गेल अछि। गोविन्ददासक मैथिली साहित्यक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवि लोकनिमे विद्यापतिक उपरान्त गोविन्द दासक नाम बड़ महत्वपूर्ण अछि। कविक मन जखन राज्य सेवासँ उबि गेलन्हि त' मिथिलासँ बंगाल चलि गेलाह। ओतय सत्संगमे चैतन्य महाप्रभुक सानिध्य प्राप्त कैलनि। कवि ईश वन्दना सँ अपन रचित काव्यसँ प्रारम्भ कैलनि। जखन मानव जीवनक वास्तविकतासँ स्वयं वियोग मे गेलाह।

सांसारिक सुख जे धन, जौवन, पुत्र-परिजनसँ प्राप्त होइछ, ओ त' क्षणिक छल। कखन ओ नष्ट भ' जायत तकर कोनो ठेकान नहि। मनुक्खक जीवनो त' क्षणभंगुर अछि। आ ओ ओहिना जेना पुरइनिक पात पर जल विन्दु टलमल करैत रहैत अछि तहिना। अहाँ थिकें नित्य भगवान श्रीकृष्णक चरण कमलक सेवा वन्दना।

" हृदय मन्दिर मोर कान्ह समाओल प्रेम प्रकट रहु जागि।
गुरु-जन-गौरव चोर सदृश भेल दुरहि दूर रहु भागि॥"

प्रस्तुत पाँति गोविन्ददास भजनावली द्वारा रचित 'प्रीति' रचनासँ लेल गेल अछि। ई शृंगारक पद गीत अछि एहि मे प्रेमक दशा सखीसँ सुनबाक राधा विचलित अछि आ राधा अपन सखी के अपन हृदयक बात मे मनोव्यथा सुनबैत छथि। हे सखी हमर हृदय रूपी घरमे कृष्ण पैसि गेल छथि। ओ कृष्ण भागि नै जाथि तेँ गुरुजन क सम्मानमे जे गौरव भाव छल से चोर जका दूर भागल रहैत अछि।

हे सखी एहि मन प्रियतम कृष्णक प्रेममे हम आब गुरुजन, कुलजन सँ डेराइत नहि छी। डरक भाव आब दूर भ गेल। आ आदरणीय गुरुजन त ओ सब हमर बलाय कुड़ाइत छथि। किएक जे कखनो कान्हा आबि प्रेम पर चोट द रहल छथि। जे कखनो क' हृदय मे समा जाइत अछि।

एहि पदमे राधा-कृष्णक अनुपम प्रेमक वर्णन, विलक्षण भावक कल्पनाक संग कवि कैलनि अछि। वस्तुतः महाकविके राधा-कृष्ण प्रेमसँ विशिष्ट रूपक वर्णन अपन चातुर्यसँ करबामे सफल भेल छथि। गोविन्ददास एहि भजन यद्यपि अलंकारक प्रधानता देखल जाइछ। राधा-कृष्ण एहि प्रेम लीलाकेँ परोक्ष रूपेँ कल्पनाक भित्ती पर देखि-देखि मुग्ध होइत छथि।